UNIVERSAL LIBRARY
OU_182998
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—23—4-4-69—5,000.

**OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY**

Call No. H81 D58M    Accession No. P. G. H 2820

Author दिनकर, रामधारी सिंह

Title मिर्च का मजा

This book should be returned on or before the date last marked below.

# मिर्च का मजा

[बालोपयोगी सात कविताओं का संग्रह]

श्री रामधारी सिंह दिनकर

Post Graduate Library
College of Arts & Commerce, O.

प्रकाशक

श्री अजन्ता प्रेस (प्राइवेट) लिमिटेड

पटना—४

*


| | |
|---|---|
| मिर्च का मजा | १ |
| पढ़क्कू की सूझ | [illegible] |
| चूहे की दिल्ली-यात्रा | ६ |
| अंगद-कुदान | ८ |
| कर्र करो या कुर्र, काला-काला एक न छोड़ूँगा | १२ |
| मामा के लिए आम | १५ |
| झब्बू का परलोक-सुधार | १६ |



P. G.
H2820
H81 D58M


*


मुद्रक—श्री राजेश्वर झा, श्रीअजन्ता प्रेस (प्राइवेट) लिमिटेड, पटना–४

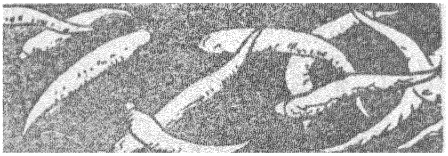

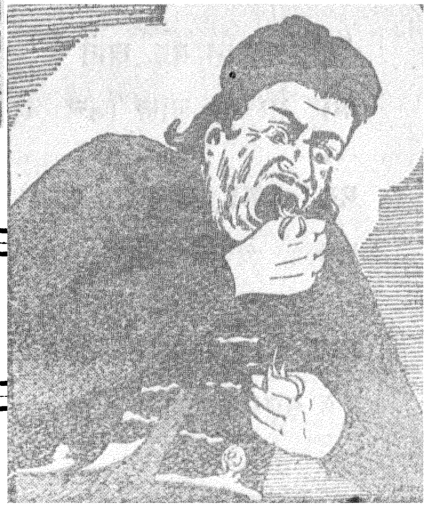

# मिर्च का मजा

एक काबुलीवाले की कहते हैं लोग कहानी,
लाल मिर्च को देख गया भर उसके मुँह में पानी।

सोचा, क्या अच्छे दाने हैं, खाने से बल होगा
यह जरूर इस मौसिम का कोई मीठा फल होगा

एक चवन्नी फेंक और झोली अपनी फैलाकर
कुँजड़िन से बोला बेचारा ज्यों-त्यों कुछ समझाकर।

"लाल-लाल, पतली छीमी हो चीज अगर खाने की,
तो हमको दो तोल छीमियाँ फकत चार आने की।"

"हाँ, यह तो सब खाते हैं"— कुँजड़िन बेचारी बोली,
और सेर भर लाल मिर्च से भर दी उसकी झोली।

मगन हुआ काबुली फली का सौदा सस्ता पाके,
लगा चबाने मिर्च बैठकर नदी-किनारे जाके।

मगर, मिर्च ने तुरत जीभ पर अपना जोर दिखाया,
मुँह सारा जल उठा और आँखों में जल भर आया।

पर, काबुल का मर्द लाल छीमी से क्यों मुख मोड़े ?
खर्च हुआ जिसपर उसको क्यों बिना सधाये छोड़े ?

आँख पोंछते, दाँत पीसते, रोते औ' रिसियाते,
वह खाता ही रहा मिर्च की छीमी को सिसियाते।

इतने में आ गया उधर से कोई एक सिपाही,
बोला, "बेवकूफ ! क्या खाकर यों कर रहा तवाही ?"

कहा काबुली ने—"मैं हूँ आदमी न ऐसा-वैसा।
जा तू अपनी राह सिपाही, मैं खाता हूँ पैसा !"

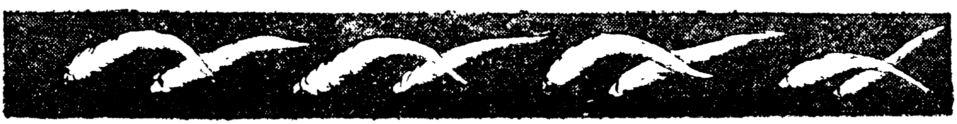

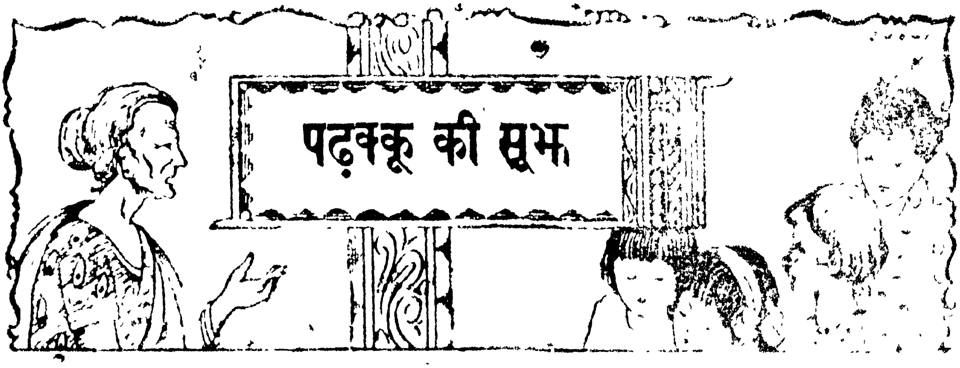

# पढ़क्कू की सूझ

एक पढ़क्कू बड़े तेज थे, तर्कशास्त्र पढ़ते थे,
जहाँ न कोई बात; वहाँ भी नई बात गढ़ते थे।

एक रोज वे पड़े फिक्र में समझ नहीं कुछ पाये,
"बैल घूमता है कोल्हू में कैसे बिना चलाये ?"

कई दिनों तक रहे सोचते, तेली बड़ा गजब है ?
सिखा बैल को रक्खा इसने, निश्चय कोई ढब है।

आखिर, एक रोज तेली से पूछा उसने ऐसे,
"अजी, बिना देखे, लेते तुम जान भेद यह कैसे ?

"कोल्हू का यह बैल तुम्हारा चलता या अड़ता है ?
रहता है घूमता ? खड़ा हो या पागुर करता है ?"

तेली ने यह कहा, "अजी, इसमें क्या बात बड़ी है ?
नहीं देखते क्या, गर्दन में घंटी एक पड़ी है ?

"जबतक यह बजती रहती है, मैं न फ़िक्र करता हूँ,
हाँ, जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ।"

कहा पढ़क्कू ने सुनकर, "तुम रहे सदा के कोरे!
बेवक़ूफ़! मंतिख की बातें समझ सकोगे थोड़े?

"बैलराम का तुमने तो सीधे विश्वास किया है,
मगर, कभी क्या इस बारीकी पर भी ध्यान दिया है?

आखिर है ससुराल, तरीके बतलाना बेचारों को,
भोज-भात के समय जरा बस में रखना इन प्यारों को।"

"जो आज्ञा"—कह चले लखन भाई का हुक्म बजाने को,
आये दौड़े हुए वानरों को सभ्यता सिखाने को।

कहा कि "अय भाइयो! अवध यह नहीं, नहीं पंपापुर है,
यह मिथिला विख्यात जनक की, रामचंद्र का सासुर है।

खबरदार! बन्दरपन अपना यहाँ नहीं दिखलाना तुम,
और खासकर भोज-भात में हँसी नहीं करवाना तुम।

यहाँ लोग व्यंजन में रूई, काठ, धून भर देते हैं,
थाली में पत्थर परोसकर जाँच अतिथि की लेते हैं।

समझे-बूझे बिना यहाँ पर जो भी कौर उठाता है।
खाता है धोखा जरूर, पूरा उल्लू बन जाता है।

पंघत में बैठना शान्ति से, ऊधम नहीं मचाना तुम,
जिस प्रकार अंगद खायेगा, वैसे कौर उठाना तुम।

# चूहे की दिल्ली-यात्रा

चूहे ने यह कहा कि चुहिया ! छाता और छड़ी दो,
लाया था जो बड़े सेठ के घर से, वह पगड़ी दो।

मटर-मूँग जो कुछ घर में है, वही सभी मिल खाना,
खबरदार, तुम लोग कभी बिल से बाहर मत जाना।

बिल्ली एक बड़ी पाजी है रहती घात लगाए,
जाने, वह कब किसे दबोचे, किसको चट कर जाए।

सो जाना सब लोग लगाकर दरवाजे में किल्ली,
आजादी का जशन देखने मैं जाता हूँ दिल्ली।

चूँ-चूँ-चूँ, चूँ-चूँ-चूँ, चूँ-चूँ-चूँ।

दिल्ली में देखूँगा आजादी का नया जमाना,
लाल किले पर खूब तिरंगे झंडे का लहराना।

अब न रहे अँगरेज, देश पर अपना ही काबू है,
पहले जहाँ लाट सहब थे, वहाँ आज बाबू* हैं।

घूमूँगा दिन-रात, करूँगा बातें नहीं किसी से,
हाँ, फुर्सत जो मिली, मिलूँगा जरा जवाहरजी से।

गाँधी-युग में कौन उड़ाये, अब चूहों की खिल्ली?
आजादी का जशन देखने मैं जाता हूँ दिल्ली।

चूँ-चूँ-चूँ, चूँ-चूँ-चूँ, चूँ-चूँ-चूँ।

पहन-ओढ़कर चूहा निकला चुहिया को समझाकर,
इधर-उधर आँखें दौड़ाईं बिल से बाहर आकर।

कोई कहीं नहीं था, चारों ओर दिशा थी सूनी,
शुभ साइत को देख हुई चूहे की हिम्मत दूनी।

चला अकड़कर, छड़ी लिये, छाते को सिर पर ताने,
मस्ती मन की बढ़ी, लगा चूँ-चूँ करके कुछ गाने।

इतने में लो, पड़ी दिखाई कहीं दूर पर बिल्ली,
चूहाराम भगे पीछे को, दूर गई रह दिल्ली।

चूँ-चूँ-चूँ, चूँ-चूँ-चूँ, चूँ-चूँ-चूँ।

*राजेन्द्र बाबू, जिन्हें लोग आदर-प्रेम से
सिर्फ बाबू कहते हैं।

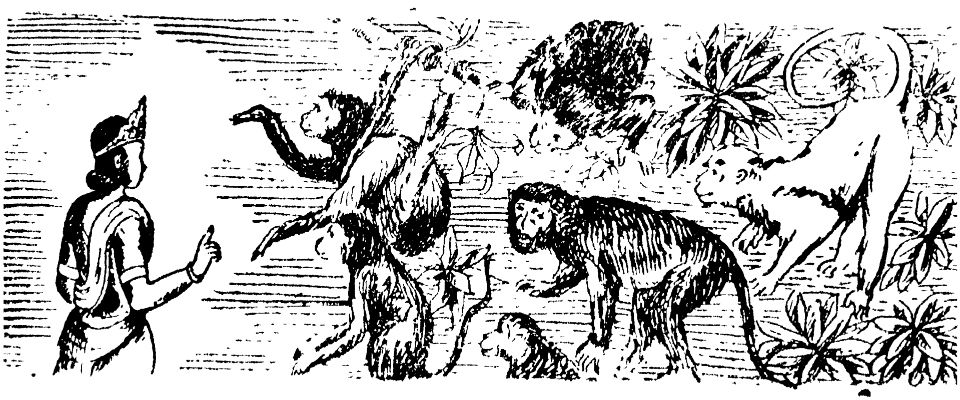

# अंगद - कुदान

रामचंद्र लंका से लौटे, आये जनक बुलाने को,
नर-वानर के साथ उन्हें ससुराल जरा ले जाने को।

पहुँचे जब सब लोग जनकपुर, बाहर कहीं पड़ाव पड़ा,
समय देखकर कहा राम ने-"लक्ष्मण, देना ध्यान जरा।

लिये बन्दरों की सेना ससुराल चले हम आये हैं,
ये वनवासी, मगर नगर की रीति सीख क्या पाये हैं।

मुझे सोच है, मिथिला में कुछ कौतुक नहीं दिखायें ये,
उछल-कूद कर कहीं हमारी हँसी नहीं करवायें ये।

आखिर है ससुराल, तरीके बतलाना बेचारों को,
भोज-भात के समय जरा बस में रखना इन प्यारों को।"

"जो आज्ञा"—कह चले लखन भाई का हुक्म बजाने को,
आये दौड़े हुए वानरों को सभ्यता सिखाने को।

कहा कि "अय भाइयो! अवध यह नहीं, नहीं पंपापुर है,
यह मिथिला विख्यात जनक की, रामचंद्र का सासुर है।

खबरदार! बन्दरपन अपना यहाँ नहीं दिखलाना तुम,
और खासकर भोज-भात में हँसी नहीं करवाना तुम।

यहाँ लोग व्यंजन में रूई, काठ, धून भर देते हैं,
थाली में पत्थर परोसकर जाँच अतिथि की लेते हैं।

समझे-बूझे बिना यहाँ पर जो भी कौर उठाता है।
खाता है धोखा जरूर, पूरा उल्लू बन जाता है।

पंगत में बैठना शान्ति से, ऊधम नहीं मचाना तुम,
जिस प्रकार अंगद खायेगा, वैसे कौर उठाना तुम।

मैं अंगद को पत्तल की हर चीज दिखता जाऊँगा,
क्या खाये, क्या नहीं, इशारों से समझाता जाऊँगा।

तुम देखोगे सदा कि कैसे अंगद कौर उठाता है,
अंगद देखेगा कि उसे क्या लक्ष्मण भेद बताता है।"

कहा बन्दरों ने कि "ठीक है; आपस में न लड़ेंगे हम,
पंगत में अंगद की देखादेखी सिर्फ करेंगे हम।"

अब आगे की सुनो कथा, पंगत में जब बन्दर आये,
पत्तल में आधी नीबू को कटी देखकर घबराये।

सोचा—"फल को काट दिया, यह भी क्या भला तरीका है?
हमें छकाने को, अवश्य ही, यह षड्यंत्र किसी का है।"

पर, उपचार करें क्या इसका, समझ नहीं वानर पाये,
बड़ी समस्या देख सामने मन-ही-मन सब घबराये।

आखिर, हो लाचार लखन की ओर बालि-सुत ने देखा,
लक्ष्मण मन में हँसे, उगी अधरों पर मुस्की की रेखा।

फिर नीबू को उठा दबाया उसने यह दिखलाने को,
कि है परोसा गया खंड यह रस निचोड़ कर खाने को।

तब तक एक बीज नीबू का छिटक पड़ा चट से बाहर,
उछल पड़े ( संकेत जानकर ) अंगद पंघत के ऊपर।

सोचा अंगद ने कि लखन ने अच्छा ढंग विचारा है,
उछला जो यह बीज, कूदने का वह एक इशारा है।

फिर क्या था ? अंगद की देखादेखी सब कूदने लगे,
पंघत पर के और लोग, कुछ इधर भगे, कुछ उधर भगे।

हँसने लगे देखनेवाले दे-दे ताली-किलकारी,
बड़ी देर तक रही गूँजती मिथिला की वह पिहकारी।

जैसे तैसे हुई शान्ति, जब पूरा हास्य-प्रवाह बहा,
कहा राम ने सकुचाकर—लक्ष्मण, यह कौतुक खूब रहा।

## कर्र करो या कुर्र, काला-काला एक न छोड़ूँगा

जामुन का था एक पेड़, थे खड़े पास दो रखवाले,
गुच्छों में थे झूम रहे फल पके-पके, काले-काले।

रस से भरे हुए फल रह-रह टपक-टपक कर गिरते थे,
रखवाले थे मौज मनाते, चुन-चुन खाते फिरते थे।

मोगल एक उधर से गुजरा, देख फलों को ललचाया,
गिरा हुआ फल एक उठाकर उस बेचारे ने खाया।

जब तक चुने और जामुन वह, मीठे फल मुँह में डाले,
दौड़ पड़े लाठियाँ उठाये तब तक दोनों रखवाले।

भाग चला मोगल चिल्लाते, जामुन और न खाऊँगा,
मगर, कहा मन-ही-मन, "अच्छा, इसका मजा चखाऊँगा।

"जी भरकर लाठियाँ घुमाओ, करो शाम तक रखवाली,
आज रात मैं साफ करूँगा जामुन की डाली-डाली।"

रखवाले जब लौट गये घर, अन्धकार जग में छाया,
सचमुच, मोगल पास पेड़ के चुपके चोरों-सा आया।

इधर-उधर देखा, कोई भी कहीं नहीं जब दीख पड़ा,
मोगल खूब खुशी से फूला, उस जामुन पर फाँद चढ़ा।

सोचा, ऊपर पहुँच पेट भर पहले तो फल खाऊँगा,
पीछे कच्चे-पके सभी जामुन को तोड़ गिराऊँगा।

यह विचार कर लगा पके जामुन चुन-चुन कर खाने वह,
और खुशी में भरकर गुन-गुन गीत अनोखा गाने वह।

अँधियाला था घना, नहीं कुछ साफ देख वह पाता था,
जो कुछ आता हाथ, उसे वह मुँह में देता जाता था।

काले-काले भ्रमर रात में जो पेड़ों पर सोते हैं,
जामुन के फल के समान ही गोल-गोल वे होते हैं।

फल के धोखे पकड़ उन्हें भी मोगल खाता जाता था,
खुशी-खुशी, दाँतों से उनको खूब चबाता जाता था।

कर्र-कर्र, कुर-कुर करते जब भौंरे दबकर दाँतों से,
और चार को पकड़ चबाता मोगल अपने हाथों से ।

लेकिन, समझ नहीं पाता वह, कड़-कड़-कड़ क्या करता है;
कड़ा-कड़ा क्या है? जामुन क्यों मुँह के भीतर गड़ता है?

कहता, 'जो जामुन शरीफ हैं, नहीं दाँत में गड़ते हैं;
पर जो हैं शैतान वही नाहक यों कड़-कड़ करते हैं ।'

कई बार जब कर्र-कर्र की कल्ले में आवाज हुई,
बिगड़ उठा मोगल, आखिर तबियत उसकी नासाज हुई ।

बोला, 'चाहे कर्र करो या कुर्र, न मैं मुँह मोड़ूँगा,
काला-काला एक भी न फल किसी डाल पर छोड़ूँगा !'

# मामा के लिए आम

मीठे - मीठे आम टपकते खाते चुन्नू-मुन्नू,
चुन-चुनकर कुछ अलग जुगाते जाते चुन्नू-मुन्नू।

भक्तराज का वेष बनाये
इतने में गीदड़जी आये।

बोले, पता नहीं क्या तुमको चुन्नू-मुन्नू प्यारे!
नदी - पार बैठे हैं आकर मामा बड़े तुम्हारे।

लम्बे तगड़े बड़े छबीले,
तन में नहीं कहीं से ढीले

पूरे पहलवान हैं, मैं तो मुक्के से डरता हूँ,
जो देते हैं हुक्म, हमेशा वही किया करता हूँ।

अभी कहा, जाओ तुम जल्दी,
आम माँग लाओ तुम जल्दी।

मेरे दो भानजे पास ही कहीं बाग में रहते हैं,
बड़े सलोने हैं, सब उनको चुन्नू-मुन्नू कहते हैं।

इसीलिए, मैं भागा आया,
बरतन संग नहीं ले पाया,

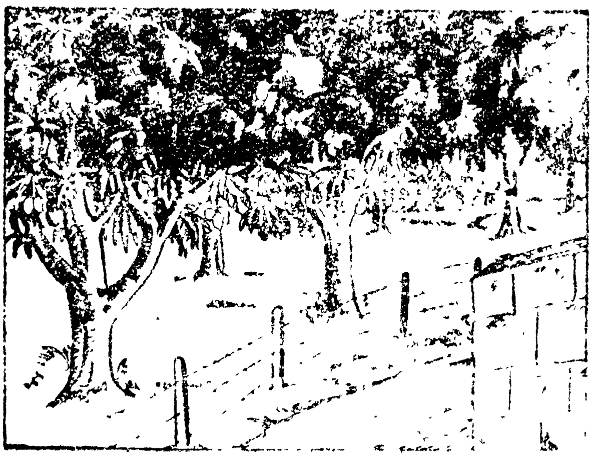

अब, चाहो तो, झोले में तुम जल्दी-जल्दी आम भरो,
जैसे भी हो, तुरत यहाँ से भैया ! मुझको विदा करो।

देर हुई तो मारेगा वह,
मेरी पूँछ उखाड़ेगा वह

मुट्ठी भर का मैं प्राणी, वह पहलवान पक्का है,
पर्वत भी तो नहीं झेल सकता उसका धक्का है।

और देखना यह भी प्यारे,
ताजे हों सब आम तुम्हारे;

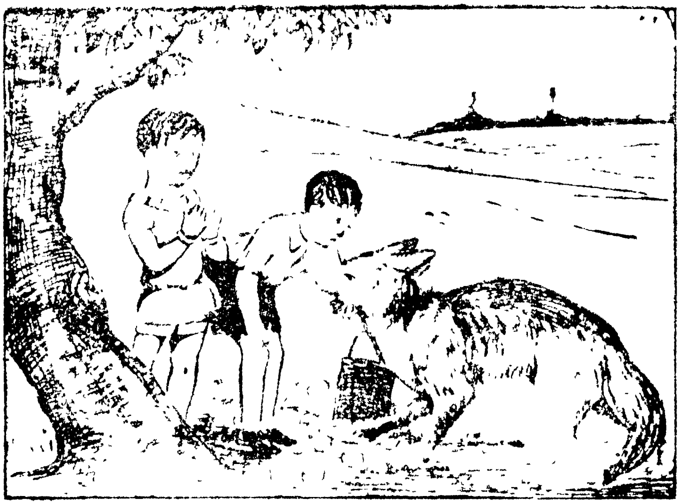

सड़े-गले आमों से तो वे और आग हो जाते हैं,
दोपहरी में मुझे डाँटकर रेती पर दौड़ाते हैं।

सुन गीदड़ की बात निराली
चुन्नू हँसा बजाकर ताली;

बोला—मुन्नू, अजब नहीं, यह मामा वही हमारे हैं,
जिनकी मूँछें बड़ी-बड़ी हैं और नयन कजरारे हैं।

वही जो कि उस दिन आये थे,
पाँच सेर पेड़े लाये थे,

एक हाथ ऊँची रोटी थाली में भर जो खाते हैं,
वही जो कि खाने पर भी दस सेर दूध पी जाते हैं।

तब तो भाई! होश करें हम,
आमों से संतोष करें हम,

जो भी आम चुने हैं, लाओ, उनको झोले में भर दें,
और पीठ पर इस गीदड़ की वह सारा बोझा धर दें।

चुन्नू-मुन्नू ने मिल-जुलकर,
दिया एक पूरा झोला भर,

फिर उसको गीदड़ पाँड़े पर धरकर उनको विदा किया,
गीदड़ ने भी बड़ी खुशी से बोझ पीठ पर उठा लिया।

कहा कि अच्छा, जाता हूँ अब,
देखो, फिर मैं आता हूँ कब?

मामाजी तो पलक मारते ही सब चट कर जायेंगे,
कल ही फिर झोली लेकर वे, निश्चय, मुझे पठायेंगे।

❀

# झब्बू का परलोक सुधार

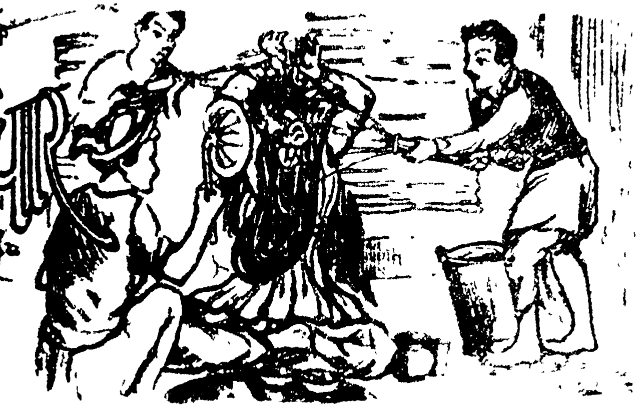

एक सेठ के गुरु आये, घर भर में छायी खुशियाली,
हुआ पर्व, नाचने लगे चुन्नू-मुन्नू दे-दे ताली।

बोला सेठ बड़े नौकर से, झब्बू! जरा रहो तत्पर,
बड़ा भाग्य है, महाराज आये हैं मुझ पापी के घर।

पर, देखो, गर्मी के दिन हैं, बड़ी तेज लू चलती है,
आँगन में है आग बरसती, घर में भट्ठी जलती है।

ऐसा करो कि गुरु को छू भी पाये गर्म बतास नहीं,
धोखे से भी उन्हें कभी व्यापे गर्मी का त्रास नहीं।

खूब खिलाओ बर्फ और मिसरी दे छाली नरम-नरम,
पंखे चलते रहें, रहे खस की टट्टी गीली हरदम।

रह रह कर ठंढे गुलाबजल की पिचकारी दिया करो,
जबतक रहें, खूब तन-मन से गुरु की सेवा किया करो।

गुरु-प्रताप से ही मनुष्य मरकर ऊँचा पद पाता है,
इसी तरह से तो अपना परलोक सुधारा जाता है।

जैसा कहा सेठ ने, झब्बू ने वैसा ही काम किया,
गर्मी के दिन में गुरु को जाड़े का हर आराम दिया।

हुए बड़े खुश गुरु जाड़े का मजा गर्मियों में पाकर,
जी भर दे आशिष आखिर को लौट गये वे अपने घर।

अब, आगे की सुनो कहानी, किस्सा अद्भुत एक नया
माघ मास छुट्टी लेकर झब्बू भी अपने गाँव गया।

और माघ में ही झब्बू के भी गुरु उसके घर आये,
हुआ धन्य झब्बू घर बैठे उसने चारों फल पाये।

लगा सोचने, मैं भी अब अपना परलोक सुधारूँगा,
गुरु-प्रताप से स्वयं तरूँगा, पुरखों को भी तारूँगा।

जो-जो किया सेठ ने अपने गुरु के पूजन की खातिर,
क्यों न करूँ मैं वही ? सेठ का ही तो हूँ नौकर आखिर

सोच-समझ झब्बू ने चारों ओर आदमी दौड़ाये,
खस की कुछ टट्टियाँ, ताड़ के पंखे भी कुछ मँगवाये।

बर्फ, ताल-मिसरी, गुलाबजल औ' कद्दू की तरकारी,
गुरु घबराने लगे देख झब्बू की अद्भुत तैयारी।

पर करते क्या ? चीज परोसी गई, उसे छोड़ें कैसे ?
आखिर, मिसरी और मलाई से मुँह भी मोड़ें कैसे ?

मगर, बर्फ में मिली मलाई दाँत हिलाये देती थी
उतर कंठ से भीतर का हर तार कँपाये देती थी ।

जाड़े का मौसिम, खस की टट्टी, पंखे दो-दो जारी,
उसपर भी शीतल गुलाबजल-भरी दनादन पिचकारी ।

'हू-हू' करके लगे काँपने जाड़े से गुरुवर 'थर-थर'
कहते हुए, "अरे बेटा ! अब बहुत हुआ, कुछ देर ठहर ।

मर जाऊँगा, हाय, बड़ा बूढ़ा हूँ, यह क्या करता है ?
गुरु के बध पर तुला हुआ है, पापी ! तनिक न डरता है

झब्बू बोला "पाप-पुण्य मैं इस दम नहीं विचारूँगा,
मरो या कि तुम जियो नाथ ! मैं तो परलोक सुधारूँगा ।

# बालपयोगी पुस्तकें

| | | | |
|---|---|---|---|
| जादू की बंसी | ॥।) | आदमी | ॥) |
| कालिय का बदला | ॥) | चित्तौड़ का साका | ॥।) |
| जादू का डंडा | ॥।) | मामाजी | ॥।) |
| हितोपदेश की कहानियाँ | १॥) | राजकुमारी का ब्याह | १) |
| सत्तू में भैंस | ॥।) | चोर का खिलाड़ी | ॥। |
| हन्स एंडर्सन की कहानियाँ | १॥।) | फूलों की रानी | १) |
| समुद्र के मोती | १।) | [illegible] | १) |
| मनोरंजक कहानियाँ | १।) | अष्टक ( दो भाग ) | |
| आश्चर्यजनक कहानियाँ | १।) | प्रत्येक भाग | ।=) |
| भूतों की कहानियाँ | १।) | रोचक कहानियाँ | १।) |
| साधु और बग | ॥।) | अनाथ बच्चे | ॥।) |
| नकली सिंह | ॥।) | सोने का तोता | ॥।) |
| छहरदार पूंछ | ॥।) | [illegible] | १) |
| ऊँचे ऊँट | ॥।) | [illegible] | १) |
| चार राजा | ॥।) | सियार का ब्याह | ॥) |
| सेठ हों तो ऐसे | ॥।) | [illegible] | ॥) |
| बटियाँ हों तो ऐसी | ॥।) | चालाक मुर्गी | ॥) |
| अनोखा संसार | ॥=) | चाँद का फूल | ।=) |
| दालिम कुमार | ॥।) | बाबा का ठोक | ।=) |
| तीस-बरात | ॥।) | गधे की भूल | ।=) |
| नवरत्न | ॥।) | समझदार मेंढक | ।=) |
| कथा-कहानी | ॥।) | सिन्दबाद की समुद्र यात्रा | १) |
| देश-द्रोही | ॥) | प्रकृति पर विजय भाग १ | ॥=) |
| सप्त-सोपान | ॥।) | " " भाग २ | ॥=)॥ |
| कुछ सच्चे सपने | ॥=) | विचित्र यात्रा | १) |
| तांश की बातें | ॥।) | मंजु विज्ञान-कथा | ॥।) |

प्रकाशक—

श्रीअजन्ता प्रेस [प्राइवेट] लिमिटेड, पटना–४